1. Theory of Education
प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत

डा० अखलाख अहमद
सहायक प्राध्यापक
डी० के० कॉलेज, डुमरांव

प्लेटो अपने आदर्श राज्य की स्थापना के लिए जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है, उसमें इनमें न्याय के बाद शिक्षा सिद्धान्त का स्थान ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। ऐसे तो साम्यवादी सिद्धान्त भी महत्वपूर्ण है, परंतु शिक्षा-सिद्धान्त उससे ज्यादा। इसका कारण यह है कि साम्यवादी सिद्धान्त नकारात्मक स्वरूप धारण किये हुए है, जबकि शिक्षा का स्वरूप सकारात्मक है, क्योंकि यह व्यक्तियों की बुराइयों को दूर करने से सम्बंधित है, व्यक्ति या या वर्ग पर रोक लगाने से सम्बंधित नहीं।

प्लेटो का शिक्षा-सिद्धान्त विशेषतः राजनीतिक महत्व रखता है, क्यों कि शिक्षा के द्वारा ही सैनिक और शासक वर्ग का निर्माण होता है। प्लेटो की शिक्षा जहाँ एक ओर सैनिक वर्ग हेतु व्यापक शारीरिक प्रशिक्षण सुनिश्चित करता है, वहीं दार्शनिक वर्ग के लिए द्वंद्वात्मक पद्धति को अनिवार्य बनाकर ज्ञान की प्राप्ति (Inlightment of Knowledge) करता है। प्लेटो द्वारा जिस शिक्षा-सिद्धान्त की बात की गई है, वह उसके न्याय सम्बंधी धारणा का ही तार्किक परिणाम है। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने कार्यों का सम्पादन तथा गैर के कार्यों में हस्तक्षेप न करना न्याय के प्रभाव में करता है, और यह कर्तव्य शिक्षा द्वारा प्रबल बनाया जाता है।

<u>प्लेटो का शिक्षा-सिद्धान्त</u> : प्लेटो के द्वारा जिस शिक्षा सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया वह दो भागों में विभक्त है —

Scanned with CamScanner

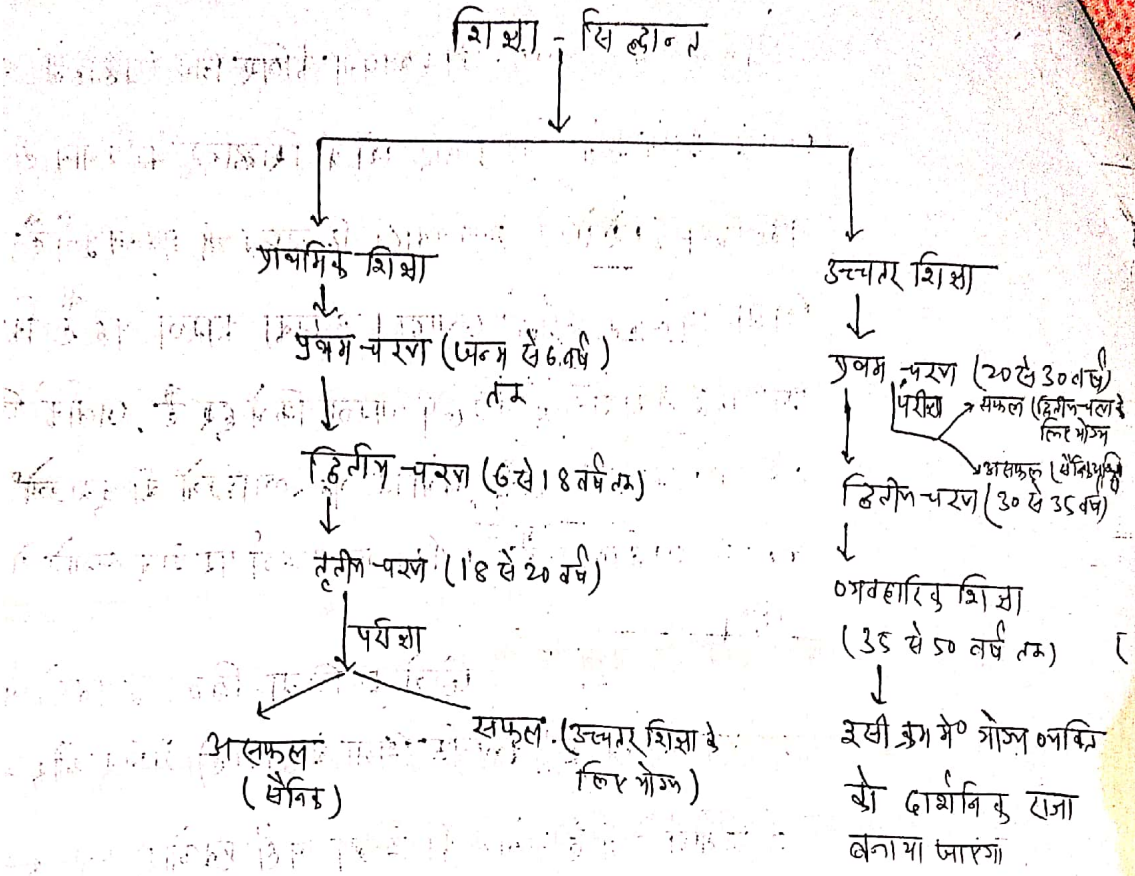

प्राथमिक शिक्षा — प्लेटो द्वारा शिक्षा की शुरूआत प्राथमिक स्तर से की जाती है, जिनके तीन चरण हैं, यानि जन्म से लेकर 50 वर्षों तक की उम्र की शिक्षा. इसके 6 वर्ष से 18 वर्ष तक की शिक्षा और तीसरे चरण में 18 से लेकर 20 वर्ष तक के उम्र की शिक्षा।

प्राथमिक-शिक्षा के प्रथम चरण में बच्चों को सरल कहानियों के द्वारा नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाता है। चूँकि बच्चों का लालन-पालन दासियों के द्वारा किया जाता है, इसलिये दासियों को राज्य द्वारा यह आदेश दिया जाता है कि वे बच्चों के समक्ष ऐसी कहानियाँ न कहें जिससे बच्चों में भय पैदा हो या गलत प्रवृत्ति जन्म ले। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए प्लेटो ने साहित्य पर राज्य का नियंत्रण लगा रखा है।

Scanned with CamScanner

प्राथमिक शिक्षा के द्वितीय-चरण में प्लेटो बच्चों के तन और मन दोनों के विकास पर ज़ोर देने की बात करता है। वह तन के विकास के लिए शारीरिक प्रशिक्षण, तथा मन के विकास के लिए संगीत की शिक्षा देने की बात कहता है। इसका ऐसा मानना है कि व्यायाम और संगीत के द्वारा व्यक्ति के चरित्र को सकारात्मक दिशा में मोड़ा जा सकता है। यहाँ भी उल्लेखनीय है कि संगीत के महत्व को देखते हुए प्लेटो ने संगीत पर राज्य का नियंत्रण लगा देने की बात कही है।

प्राथमिक शिक्षा के तृतीय-चरण, यानी 18 से 20 वर्ष की उम्र तक प्लेटो ने युवाओं के लिए सैनिक शिक्षण की व्यवस्था को अनिवार्य माना है, तथा इस अवधि की समाप्ति के बाद वह एक प्रतियोगिता परीक्षा लेने की बात कहता है, जो उच्चतर शिक्षा का आधार है, अर्थात उच्चतर शिक्षा उन्हीं को देने की बात प्लेटो करता है, जो इस परीक्षा में सफल होंगे। जो लोग इस परीक्षा में असफल होंगे उन्हें उच्चतर शिक्षा न देकर सैनिक वर्ग में शामिल कर दिया जाएगा, अर्थात नौकरी दे दी जाएगी।

उच्चतर-शिक्षा : प्लेटो ने उच्चतर शिक्षा को भी दो चरणों में विभाजित किया है - 20 से 30 वर्ष तक की आयु के बीच की शिक्षा तथा 30 से 35 वर्ष तक की आयु के बीच की शिक्षा।

Scanned with CamScanner

उच्चतम शिक्षा के प्रथम चरण (20-30 वर्ष) में प्लेटो के द्वारा गणित, ज्यामिति एवं ज्योतिष जैसे विषयों के अध्ययन पर बल दिया जाता है। प्लेटो इन विषयों का अध्ययन इसलिए कराना चाहता है, कि छात्रों को पारंपरिक सत्य को समझने में परेशानी न हो। 20 से 30 वर्ष की आयु के वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्ति के बाद पुनः एक प्रतियोगिता परीक्षा की बात प्लेटो के द्वारा की गयी है, जिसमें सफल होने वाले को उच्चतर शिक्षा के द्वितीय चरण हेतु चुना जाएगा, और जो असफल होंगे उन्हें राज्य के निम्न प्रशासनिक सैनिक पदों पर बहाल कर दिया जाएगा।

30-35 वर्ष की शिक्षा के पाठ्यक्रम में द्वंद्वात्मक (Dielectic) पद्धति के अध्ययन पर बल दिया जाता है, जो प्लेटो के अनुसार विज्ञान का परम सत्य (Science of Supreme reality) है।

अब तक की शिक्षा के बाद प्लेटो द्वारा उन शिक्षित व्यक्तियों की नियुक्ति राज्य के उच्चतम पदों पर की जाती है, ताकि उन्हें व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति हो सके। यह व्यवहारिक ज्ञान भी 35 से लेकर 50 वर्ष की उम्र यानि 15 वर्षों की होगी।

<u>शिक्षा- सिद्धान्त की विशेषताएँ</u>: प्लेटो द्वारा प्रस्तुत शिक्षा-प्रणाली की विशेषताएँ निम्नलिखित है—

(i) प्लेटो की शिक्षा-प्रणाली काफी व्यापक है। इसके शिक्षा योजना की

की व्यापकता इस आधार पर प्रमाणित की जा सकती है कि एक व्यक्ति जन्म से लेकर 50 वर्षों की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करता है। इसकी शिक्षा योजना दो चरणों, अर्थात प्राथमिक और उच्चतर शिक्षा में विभक्त है।

(ii) प्लेटो द्वारा प्रस्तुत शिक्षा प्रणाली की सबसे मुख्य विशेषता यह है कि यह शिक्षा योजना राज्य द्वारा नियंत्रित है। यह एथेन्स की शिक्षा योजना की तरह परिवार का निजी कार्य मात्र नहीं है।

(iii) प्लेटो की शिक्षा योजना पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए एक समान शिक्षा की व्यवस्था करती है। यह भी एथेन्स की प्रणाली पर एक सुधार था जहाँ स्त्रियाँ किसी प्रकार की शिक्षा से वंचित की गयी थीं।

(iv) प्लेटो की शिक्षा योजना में प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं है।

(v) प्लेटो की शिक्षा प्रणाली की पाँचवीं विशेषता यह है कि उनकी योजना में कृषकों और कारीगरों को भी कुछ सीमा तक शामिल किया गया है।

(vi) प्लेटो की शिक्षा प्रणाली में साहित्यिक एवं कलाकृतियों में कठोर नियंत्रण का प्रस्ताव किया गया है ताकि बुरे नैतिक प्रभाव की कोई भी वस्तु युवकों के हाथों में न आ पाए।

(vii) प्लेटो अपनी शिक्षा योजना के द्वारा मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर जोर देता है। उसने शारीरिक और मानसिक, सैद्धान्तिक और व्यवहारिक, सभी प्रकार की शिक्षा व प्रशिक्षणों के महत्व को स्वीकार किया है।

(viii) प्लेटो की शिक्षा योजना में एक विशेषता यह भी है कि इसमें उम्र

Scanned with CamScanner

के साथ-साथ पाठ्यक्रम भी बदलते रहता है। दूसरे शब्दों में प्लेटो की शिक्षा योजना में जिस प्रकार व्यक्ति की उम्र बढ़ती है, उसी क्रम उसके लिए पाठ्यक्रम भी बदले जाते हैं।

* प्लेटो की शिक्षा योजना को सम्पूर्णता में इस प्रकार देखा जा सकता है -

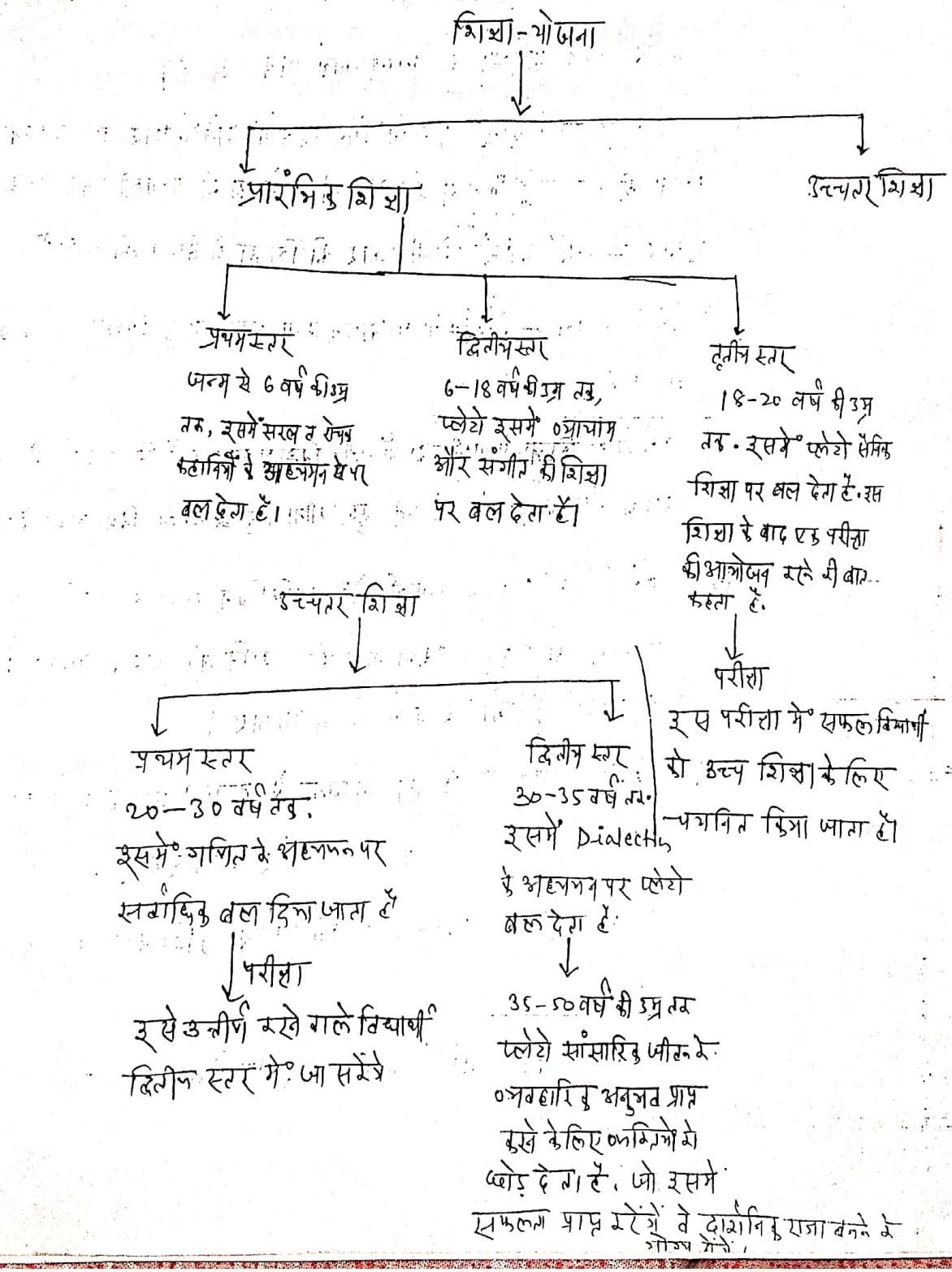

आलोचना :

विभिन्न विद्वानों द्वारा प्लेटो की शिक्षा योजना की कटु शब्दों में आलोचना की गयी है, जो निम्नलिखित है —

(i) प्लेटो की शिक्षा योजना को अप्रजातांत्रिक कहा गया है, क्योंकि यह सिर्फ सैनिक और शासक वर्गों के लिए है, उत्पादक वर्ग के लिए नहीं है। जेलर ने लिखा है कि, स्वयं अभिजात वर्ग का व्यक्ति होने के कारण प्लेटो को उत्पादक वर्ग से घृणा है, और इसी कारण उसने कृषक कारीगर, श्रमिक आदि उत्पादक वर्ग को शिक्षित होने का अधिकार नहीं दिया।

(ii) शिक्षा योजना सैद्धान्तिक अधिक और व्यवहारिक कम प्रतीत होती है। प्लेटो अपनी शिक्षा योजना को 35 वर्ष की लम्बी आयु तक खींच ले जाता है, ~~लेकिन इससे व्यावहारिक परिणाम ही निकलेगे~~। यह शिक्षा योजना जीवन भर चलने वाली है। जीवन का अधिकांश भाग शिक्षा पर ही लगाया जाता है। इससे जीवन के अन्य कार्यकलापों के लिए समय नहीं मिल पाता है।

(iii) जिस एथेन्स के शिक्षा प्रणाली का प्लेटो ने खण्डन किया था, उसने बड़े-बड़े कलाकारों, राजनीतिज्ञों, राजनीतिक दार्शनिकों को जन्म दिया था। स्वयं प्लेटो भी उसी शिक्षा प्रणाली के उपज थे। प्लेटो ने जिस स्पार्टन शिक्षा-प्रणाली की प्रशंसा की उसने ~~प्रथम श्रेणी के~~ उपरोक्त श्रेणी के किसी दार्शनिक अथवा राजनीतिज्ञ को जन्म नहीं दिया।

(iv) प्लेटो द्वारा कला तथा काव्य कृतियों का सैंसर लगाना

Dr. Akhlakh Ahmed.

अत्यंत आपत्तिजनक है। यह सब कला के लिए संहारक सिद्ध होता है। कला और साहित्य कभी राज्य के नियंत्रण में पनप नहीं सकता।

v) प्लेटो स्त्रियों और पुरुषों दोनों के लिए एक ही प्रकार की शिक्षा देने की व्यवस्था करता है। इस प्रकार वह स्त्रियों और पुरुषों की प्रकृति और भावनाओं के अन्तर के महत्व को गौण मानता है।

प्लेटो के शिक्षा सिद्धान्त को सम्पूर्णता में देखने पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भले ही इसकी कितनी भी कटु आलोचना की गयी हो, लेकिन इसके द्वारा प्रतिपादित महत्व की अनदेखी विद्वानों द्वारा नहीं की जा सकती है। प्लेटो के द्वारा स्त्री शिक्षा पर जोर दिया जाना, शारीरिक तथा मानसिक शिक्षा में परस्पर तालमेल रखा जाना, बच्चों को गंदे साहित्य से बचाना, प्रशासन के लिए शासक को तैयार करना आदि उसकी अमूल्य देन के समान हैं। प्लेटो ही वह पहला विचारक है, जिसने यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ जीवन के किसी निश्चित काल से न होकर समस्त जीवन से है। संक्षेप में कहें तो प्लेटो की शिक्षा सीमित नहीं है, बल्कि आजीवन चलने वाली है; सिर्फ मानसिक ही नहीं धार्मिक, नैतिक और शारीरिक भी है; संकीर्ण नहीं, सर्वांगीण है, सैद्धान्तिक ही नहीं, व्यावहारिक भी है। प्लेटो की शिक्षा योजना की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इबेंस्टीन लिखते हैं कि, "प्लेटो की शिक्षा योजना की यह महत्ता पर प्रकाश डालते प्रदर्शित करती है कि श्रेष्ठतर शासन एवं सार्वजनिक सेवा का मार्ग समुचित रूप से नियोजित शिक्षा पद्धति द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।"